पर्यावरण भूगोल (Environmental Geography)

पर्यावरणीय संरक्षण एवं प्रबंधन

पर्यावरणीय संरक्षण एवं प्रबंधन

पर्यावरण कई विषयों का एकीकरण है जिसमें विज्ञान और सामाजिक अध्ययन दोनों शामिल हैं। पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन का कार्यक्षेत्र बेहद व्यापक है। जिसमें पर्यावरणीय संरक्षण और प्रबंधन का तकनीकी और आर्थिक पहलू भी शामिल है। पर्यावरण नियोजन और प्रबंधन का अंतिम उद्देश्य पर्यावरण को न्यूनतम नुकसान या कोई नुकसान किए बिना संसाधनों का उचित उपयोग करना है।

"पर्यावरण संरक्षण" शब्द हमारे ग्रह की रक्षा और उसके प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए हम जो कुछ भी करते हैं उसे परिभाषित करता है। सरल शब्दों में हम पर्यावरण संरक्षण को प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन के रूप में, योजनाबद्ध तरीके से, विविधता और प्रकृति में संतुलन बनाए रखने के लिए व्यक्त करते हैं। इसमें प्राकृतिक संसाधनों का आदर्श और विवेकपूर्ण उपयोग भी शामिल है ताकि वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा किया जा सके और साथ ही साथ आने वाली पीढ़ियों के लिए अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हों।

प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हाल के दिनों में प्रगति और तीव्र औद्योगिक विकास का हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर बुरा प्रभाव पड़ा है। खनिज, तेल और कोयले जैसे गैर-नवीकरणीय संसाधनों के बड़े पैमाने पर निष्कर्षण और शोषण या भौतिक पर्यावरण को हुए नुकसान ने हमारे पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक गंभीर खतरा पैदा कर दिया है।

विश्व में तेजी से जनसंख्या की वृद्धि हो रही है, खासकर विकासशील देशों में। तीव्र जनसंख्या वृद्धि संसाधन पर दबाव की स्थिति पैदा कर रही है क्योंकि संसाधन सीमित मात्र में है जों कि आबादी की एक निश्चित संख्या के पोषण के लिए ही हैं। संख्या के अलावा, वर्तमान जीवन शैली और तेजी से औद्योगिक विकास के परिणामस्वरूप हमारे प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हुआ है। इसने प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र में मानवीय क्रियाकलापों को बढ़ा दिया है और इसके परिणामस्वरूप कई पर्यावरणीय समस्याएं जैसे वन्यजीवों का नुकसान, वायु, जल, भूमि और ध्वनि प्रदूषण, निर्वनीकरण, घटते जीवाश्म ईंधन (कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस), जीवित जीवों के शरीर में हानिकारक अनुपात में कीटनाशकों का संकेन्द्रण है। इन क्रियाकलापों ने कई वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दिया है जैसे जैवविविधता की हानि, मरुस्थलीकरण, भूमंडलीय तापन, जलवायु परिवर्तन और ओजोन परत का ह्रास।

पर्यावरणीय संरक्षण के प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार हैं:

i. पर्यावरणीय प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग तथा विकास पर नियंत्रण।
ii. भूमंडलीय तापन और जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों पर ध्यान देना।
iii. अतिविषम घटनाओं यानी प्राकृतिक खतरों और आपदाओं का प्रबंधन
iv. पर्यावरणीय इंजीनियरिंग के क्षेत्र में विकास।
v. पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आवास संरक्षण आदि।

पर्यावरणीय प्रबंधन

पर्यावरणीय प्रबंधन पूरी तरह से एक उभरती हुई गतिशील अवधारणा है। यह मुख्य रूप से पर्यावरण के प्रबंधन से संबंधित है जिसमे व्यवसाय या विकास सम्मिलित हैं। यह आम तौर पर पर्यावरण निगमित नीति के कार्यान्वयन के लिए संगठनात्मक संरचना, जिम्मेदारी अनुक्रम, प्रक्रियाओं और पूर्व शर्त को प्रस्तुत करता है। उचित पर्यावरण प्रबंधन के प्रमुख कार्य, लक्ष्य निर्धारण और निगरानी, सूचना और संचार प्रबंधन तथा निर्णय लेने में सहायता करना है। पर्यावरण प्रबंधन में विभिन्न परियोजनाओं की आंतरिक और बाहरी लेखा परीक्षा और इसके कार्यान्वयन भी शामिल हैं।

आम तौर पर, जब पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न होती हैं, तब पर्यावरण प्रबंधक अपव्यय या क्षति को कम करने की योजना बनाते हैं।

प्रमुख पर्यावरणीय समस्याएं प्राकृतिक संसाधनों की गुणवत्ता में निम्नीकरण या गिरावट रही हैं- उदाहरण के लिए, भूमि, मृदा, जल और वायु आदि की प्राकृतिक गुणवत्ता में कमी या गिरावट। साथ ही वन्यजीवों, वनस्पतियों और जीवों को नुकसान पारिस्थितिकी तंत्र में गंभीर व्यवधान की ओर ले जा रहा है। प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के लिए ये विनाश भूमंडलीय तापन और जलवायु परिवर्तन जैसी बड़ी वैश्विक समस्याओं का कारण बन रहे हैं। पिछले तीन दशकों में हमारे पर्यावरण के संरक्षण के लिए कई प्रयास किए गए हैं। इसलिए मजबूत और प्रभावी पर्यावरण प्रबंधन योजना की आवश्यकता है।

कोयला और पेट्रोलियम जैसे ऊर्जा संसाधन तेजी से घट रहे हैं, और एक बार इसके समाप्त हो जाने के बाद, हमें ऊर्जा के किसी अन्य स्रोत पर निर्भर रहना पड़ेगा। अत्यधिक दोहन और अनियोजित विकास के कारण प्राकृतिक संसाधनों के ह्रास की समस्या उत्पन्न होती है। एक निश्चित आबादी के

आवश्यकताएं पूरी करने के लिए संसाधन सीमित मात्र में उपलब्ध हैं। जनसंख्या दबाव के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, पर्यावरण की पुनर्जनन क्षमता की तुलना में तेजी से हो रहा है। उदाहरण के लिए, कोयला और पेट्रोलियम के बनने में बहुत समय लगता है। ये गैर-नवीकरणीय संसाधन भी हैं। इसलिए, हमारे लिए अपने प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा और संरक्षण सुनिश्चित करना बहुत महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के विभिन्न तरीके हैं। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का केंद्रीय विचार इसका आदर्श या इष्टतम उपयोग है। संसाधनों का उपयोग तीन तरीके से किया जाता है जैसे उपयोग कम करने, संसाधनों के पुन:उपयोग और सामग्रियों के पुर्नचक्रण के द्वारा।

पर्यावरण प्रबंधन योजना

पर्यावरण प्रबंधन योजना में आदर्श रूप से निम्नलिखित बातें शामिल होने चाहिए:

1. पर्यावरण के प्रबंधन के लिए प्रशासनिक और तकनीकी व्यवस्था। प्रस्तावित पर्यावरण प्रबंधन योजना के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अन्य संगठनों एवं सरकारी अधिकारियों के साथ प्रस्तावित संस्थागत व्यवस्था,
2. पर्यावरणीय नियमों के अनुपालन के लिए स्व-निगरानी का तंत्र,
3. विकास प्रक्रिया में पर्यावरण प्रबंधन योजनाओं को एकीकृत करना, प्राकृतिक संसाधनों, जैसे जल, भूमि, ऊर्जा, आदि के उपयोग को कम करने के उपाय, और पुन: उपयोग तथा पुनर्चक्रण का प्रावधान करना,
4. विभिन्न घटकों के लिए प्रस्तावित विभिन्न शमन या कम करने के उपायों की पर्यावरणीय लेखा-परीक्षण करना तथा
5. पर्यावरण प्रबंधन प्रकोष्ठ की स्थापना और विभिन्न पर्यावरणीय घटकों के लिए निगरानी प्रोटोकॉल तैयार करना।

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR